पहला गिरमिटिया : शाश्वत मूल्यों के लिए संघर्षशील महापुरुष की जीवन गाथा

प्रा. (डा.) आर. बी. भुयेकर, प्र. प्राचार्य, गोपाळकृष्ण गोखले महाविद्यालय, कोल्हापुर.

गिरिराज किशोर द्वारा लिखित पहला गिरमिटिया उपन्यास सन 1991 नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ ने प्रकाशित किया है। यह एक बृहत उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास का मुख्य पात्र सामान्य व्यक्ति मोहनदास गांधी को 'महात्मा'' बनाने की घटनाओं पर केंद्रीत है। इसमें महात्मा के जीवन संघर्ष की गाथा को रेखांकित किया है। कई विदेश दौरों कै दौरान लेखक गिरिराज किशोर ने गांधीजी के अनुभवों के विविध पहलुओं को प्रस्तुत उपन्यास में उद्घाटित किया है।

'गिरमिटिया' याने अश्वेत भारतीय कुली को दक्षिण अफ्रिका में रहने के लिए दिया गया परमिट है। "यह गिरमिटिया सामान्य कुली की जातिवाचक संज्ञा बनी थी, परंतु विडंबना इस बात की है कि बैरिस्टर मोहनदास भी इसी उपनामों से संबोधित था। यह तिरस्कार पूर्ण संज्ञा पददलित के मसीहा ने सहर्ष स्वीकार की। दक्षिण अफ्रिका की धरती पर पग रखते ही दासता का प्रखरता एहसास होता था। मोहनदास भी अपवाद नहीं था। यातना, अपमान, पिटाई, दमन की आग में जलकर सुवर्ण पुरूष बने इस महामानव का अलक्षित आयाम सहसा प्रदीप्त हो उठा है।"। 1 इस उपन्यास के माध्यम से महात्मा गांधीजी के जीवन के विविध प्रसंग तथा दक्षिण अफ्रिका के प्रवास के दाैरान महात्मा गांधी जी ने वर्ण-द्रेष का जो रूप देखा उसे उजागर किया गया है।

महात्मा गांधी जी वकालत के लिए जब दक्षिण अफ्रिका में पहुंचे तब उन्होंने देखा कि वहां के गोरे लोग काले लोगों के साध बुरी तरह से भेदभाव करते थे। साथ ही उन्होने भारतवासियों को अपने अधिकारों से वंचित रखा था। गांधीजी ने यह सब देखा तब वे अस्वस्थ हुए। उन्होंने यह निश्चय किया कि जब तक दक्षिण अफ्रिका में भारतीयों को न्याय और अधिकार नहीं मिलता, तब तक इन गोरे लोगों के खिलाफ संघर्ष करुंगा! और यह भी तय किया कि जब तक भारतीयों के मन में अपने अधिकार के प्रति जागरुकता निर्माण नहीं होती, तब तक उनके खिलाफ संघर्ष करुंगा। महात्मा गांधीजी ने भी स्वयं इसका अनुभव लिया था।

यात्रा के दौरान गांधीजी को वर्णभेद के कारण रेल के प्रथम श्रेणी के डिब्बे से बाहर फेंकना, फूटपाथ पर चलने के अपराध में उनकी अमानुष पिटाई करना तथा जहाज से उतरते ही सामूहिक गुंडागर्दी से लहुलूहान होना आदि घटनाओं ने गांधीजी के व्यक्तित्व पर गहरा असर हो गया था। मजदूर बनकर दक्षिण अफ्रिका में काम करनेवाले भारतीयों की हालत देखकर गांधी ने अपने गहरी संवेदना प्रकट की है, गिरिधर राठी ने सच कहा है, ''अतिविस्तार तथा तथ्यों और कालक्रमिकता की कुछेक छोटी -मोटी खामियों के बावजूद पहला गिरमिटिया गांधीजी के बारे में कुछ और जानने की भूख जगा सकता है। यह एक सामान्य व्यक्ति की खोज, संघर्ष तथा उसके क्रमश: सफलता असाधारण सोपानों को तय करने की यात्रा है। गांधी को अपने मार्ग को अकेले ही, विलायत पलटे बैरिस्टर होने के बावजूद बनाना पडता है। यहाँ व्यक्तिगत भौतिक, आध्यात्मिक एव सामाजिक राजनीतिक कायांतरणों से गुजरने की यात्रा संपन्न होती है। ज्योंकि अंतत: व्यापक वैश्विक प्रमाद डालनेवाली साबित होती है।''2 विविध देशों की खोज यात्रा करने के पश्चात लेखक महात्मा गांधीजी के व्यक्ति-चित्र तथा उनके जीवन के पहलुओं को रेखांकित किया है।

गांधीजी ने अपने स्वाभाविक कार्य के बल पर गरीबों, शोषितों, वंचितों तथा उपेक्षित लागों के कल्याण के लिए अपना जीवन समर्पित किया है। वे दक्षिण अफ्रिका में मूलत: पैसा कमाने के लिए गए थे, परंतु वहाँ के हिंदुस्तानियों की परिस्थिति देखने के पश्चात गांधीजी अचंभित हो गए वहाँ उन्होने विभिन्न धर्मो एवं सप्रदायो के लोगों के भीतर मानवता के बीज बो दिए और वहाँ के सभी हिंदुस्तानियों को आत्मसम्मान की भावना से आलोकित भी किया। अफ्रिका में गांधीजी का जीवन संघर्ष दो दशकों से भी अधिक था। इसलिए दक्षिण अफ्रिका में गांधीजी ने जो जीवन बिताया उसको उनके जीवन के राजनीति की पहली सीढ़ी मानी जाती है। उन्होंने सत्य, अहिंसा और मानवता को आधार बनाकर अपनी राजनीति की शुरुआत की। सेवा भाव और मानवी मूल्यों का पहला पाठ इसी दक्षिण अफ्रिका की पाठशाला में पढ़े। उनका दक्षिण अफ्रिका का जीवन आम आदमी की संवेदनाओं से मिलता-जुलता था। गांधीजी मानते थे कि अफ्रिका में हिंदुस्तानियों की दुर्दशा का कारण उनमें एकता का अभाव है। इसी सोच के तहत वे सेठ अब्दुल्ला और तैयब जी जैसे प्रतिदवंद्वियो को मुकदमे बाजी से जीत कर समझौता करवा देने में सफल हो गए।

गांधीजी 'भारतीयों के अधिकारों की लडाई को व्यापक बनाना चाहते थे। इसके लिए सभी गिरमिटियों को एकजुट कर उनके द्वारा इस लडाई को सर्वव्यापी बनाना चाहते थे। लेखक के शब्दों में, '" आप मानें या न मानें लेकिन आगे चलकर इस पूरे संघर्ष के कवच यही लोग होंगे जिन्हें हम गिरमिटिया का नाम देकर अपने से काटकर अलग कर देना चाहते है। आपका अपना महत्त्व है... इनका सबके लिए महत्त्व है। कोई भी परिवर्तन इनके बिना संभव नहीं। ये जल प्लावन भी कर सकते हैं और जल प्लावन के समय टीला बनकर खडे भी हो सकते है?''3 दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी ने सभी गिरमिटियों को संगठित करने हेतू सन 1804 में नेशनल काँग्रेस की स्थापना की थी। यह एक ऐसी संस्था थी जो घृणा और भेदभाव के खिलाफ मानव मुक्ति चाहती थी।

मोहनदास को दक्षिण अ़फ्रीका के उपनिवेशों में भारतीयों की दयनीय स्थिति को समझते देर नहीं लगती। उन्हें रह-रहकर यह बात परेशान करती है कि "आख़िर भारतीय यहाँ इतना दबकर क्यों रहते हैं। वे अपने अधिकारें को पहचानते क्यों नहीं।" ४ इ़ज़्ज़त और बेइ़ज़्ज़त का उनके लिए क्यों कोई मतलब नहीं रहा। पल-पल मरना ही उनके जीवन की असलियत क्यों बन गया है? क्या पीड़ित और डरे हुए भारतीयों को जगाया नहीं जा सकता? ये सवाल उन्हें भीतर तक कुरेदते हैं। इसलिए वह भारतीय समुदाय से मिलने के लिए यदि बेचैन हो उठते हैं तो कुछ भी अस्वाभाविक नहीं। यात्रा के दौरान मिले अपने जख़्मों में वह पूरे स्थानीय भारतीय समाज के जख़्मों को जो देख रहे हैं! तैयब सेठ से अपनी पीड़ा का बयान करते हुए वह इस बात पर आश्चर्य प्रकट किये बिना नहीं रहते कि "यहाँ के लोग चाहे यात्री के रूप में आये हों या बँधुआ मज़दूर यानी गिरमिटिया के रूप में...सबकी जद्दोजहद पैसे के लिए है। अपने जख़्मों का मरहम वे पैसा को ही समझते हैं। सुख-शान्ति और इ़ज़्ज़त से बड़ा पैसा...? वे सिर्फ़ पैसा ही क्यों देखते हैं? उनकी पहचान क्या सिर्फ़ पैसा बनायेगी? अगर वे पैसे को अपनी शक्ल मान लेंगे तो उनकी शक्लें सिक्कों में बदल जाएँगी। नाक-नक़्श पैसा ही हो जाएगा।"५ अत: स्पष्ट है कि स्वातंत्र्य, समता और बंधुत्व को महत्त्व देकर मानवी संघर्ष के लिए भारतीयों को तैयार करती थी। भारतीयो की दुर्दशा के खिलाफ तथा उनको जेल में दी जानेवाली अमानवीय क्रूरता के खिलाफ तथा उनके अन्याय, अत्याचार के खिलाफ गांधीजी ने आवाज उठाई और मानव जीवन को शाश्वत मूल्यों के लिए संघर्ष किया।

अंत में कह सकते है कि 'पहला गिरमिटिया' महात्मा गांधी की जीवन यात्रा की एक खुली किताब है, जिसमें गांधीजी के जीवन में आई विविध घटनाओं को केंद्र में रखकर प्रस्तुत किया है। गांधीजी ने मानव मुक्ति, संघर्ष, वर्णद्रेष तथा अँग्रेजो की कुटनीति को बेनकाब करते हुए दुनिया को यह दिखाने का प्रयास किया है। वर्णद्रेष और घृणा से परे मानव जीवन होता है। जनसेवा को ईश्वर सेवा मानकर मानवी जीवन के शाश्वत मूल्यो को तलाश कर प्रेम, भाईचारा और राष्ट्रीय एकता का संदेश प्रस्तुत उपन्यास के जरिए साहित्यकार ने दिया है।

उपन्यास में शिल्प से अधिक है महापुरूष की जीवन गाथा। इस नाते विचार करने से ग्रंथ की रचना संपूर्णतया तटस्थभाव से की गई मिलती है। पूरे ग्रंथ के पारायण का प्रभाव, सकारात्मक तक पूर्ण तथ्यात्मक व्यक्तित्व के विकास की निष्पक्ष प्रस्तुति है। कुछ भी दैवीय नहीं, चमत्कार नहीं, अतिमानवीय नहीं। ग्रंथ में प्रसंग है कि त्रस्त अफ्रीका राष्ट्रपति स्वयं मोहनदास से ही पूछता है कि गांधी को निष्प्रभावी करने के समस्त तंत्र वह कर चुका, अब गांधी ही बताए कि गांधी को कैसे परास्त किया जाए! और, गांधी का तर्कपूर्ण मानवीय तथ्यात्मक उतर आता है 'प्रेम से'। विश्व को यह चमत्कार लगा, लगेगा भी पर ग्रंथ बताता है कि यही परिस्थिति का सच है, एकमात्र सच। लेखक की निर्लिप्तता ही उसके श्रेष्ठ लेखन की कसौटी है, प्रमाण भी। अत: प्रस्तुत उपन्यास जैसे अपने उद्देश्य की दृष्टि से सफल हुआ है, वैसे ही उपन्यास कला की दृष्टि से, शीर्षक, संवाद, देशकाल, भाषा शैली की दृष्टि से भी अद्वितीय सिद्ध हुआ है। हिंदी साहित्यकोश में गिरिराज किशोर जी ने चार चाँद लगाए है.

संदर्भ :

1. आदवानी (प्रो.) मालती, दसवें दशक के प्रतिनिधी उपन्यास, सार्थक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 56
2. गुप्ता (संपा.) अजित, मधुमती, राजस्थान साहित्य अकादमी, सेक्टर 4 उदयपुर, मई, 2000, पृ. 118
3. किशोर गिरिराज, पहला गिरमिटिया, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 1991, पृ. 25
४. किशोर गिरिराज, पहला गिरमिटिया, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 1991, पृ. 88
५ किशोर गिरिराज, पहला गिरमिटिया, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 1991, पृ. 156